## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Course | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Bachelor of Arts in Multidisciplinary Study- Sanskrit | | |
|---|---|---|
| Programme:- Bachelor of Arts – SANSKRIT | Year: III | Semester: V Paper- DSC I |
| Course Code: DSC 05 | Course Title: **काव्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण** | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्‌भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।
2. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
3. दार्शनिक तत्त्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
4. व्याकरणशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | आचार्य विश्वनाथ–साहित्यदर्पण का षष्ठः परिच्छेदः– काव्य के अन्यनिमित्तक भेद : दृश्य काव्य, कारिका 1 से 19 कारिका पर्यन्त–कारिकाओं का अर्थ एवं टिप्पणी। |
| **Unit II** | साहित्यदर्पणः– षष्ठः परिच्छेदः– श्रव्य काव्य, कारिका 313 से 337 कारिका पर्यन्त– कारिकाओं का अर्थ, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न। |
| **Unit III** | अन्नंभट्‌ट–तर्कसंग्रह प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण पर्यन्त– ग्रन्थ का परिचय, रचनाकार का परिचय, व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न। |
| **Unit IV** | अन्नंभट्‌ट–तर्कसंग्रह अनुमान प्रमाण से समाप्ति पर्यन्त– व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न। |
| **Unit V** | लघुसिद्धान्तकौमुदी – प्रत्यय परिचय, (कृदन्त) तव्यत्, अनीयर्, ण्वुल्, तृच्, क्त, क्तवतु, क्तिन्, तुमुन् एवं घञ्। व्याकरण सूत्रों की व्याख्या, एवं उदाहरण। |

**Suggested Reading:**


1. काव्यालंकार– वामप कृत शिवनारायण शास्त्री, परिमल,दिल्ली प्रकाशन।
2. साहित्यदर्पण– आचार्य विश्वनाथ कृत प्रो0 सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
3. तर्कसंग्रह (अन्नम् भट्ट)– डॉ0 चन्द्रशेखर द्विवेदी।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी–कृदन्त प्रकरण– महेश सिंह कुशवाहा।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्री धरानन्द शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, बनारस।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी–डॉ0 सुरेन्द्र देव शास्त्री।
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी–वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1–6 भाग)।
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी–गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी–डॉ0 उमेश चन्द्र पाण्डे, चौखम्बा प्रकाशन।
10. काव्यदीपिका–कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य– मोती लाल बनारसी दास दिल्ली ।
11. साहित्यदर्पण–लक्ष्मी टीका– चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bachelor of Arts in Multidisciplinary Study-Sanskrit | | | |
| Programme:- Bachelor of Arts – SANSKRIT | | Year: III | Semester: V Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 03 | Course Title: **भारतीय दर्शन** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी दर्शन का अर्थ भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझ सकेंगे।
2. आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों की परिभाषा एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी दर्शन के मौलिक सिद्धान्तों से सुपरिचित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थी दर्शन के माध्यम से संपूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | आस्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय। |
| **Unit II** | आस्तिक दर्शनों में आत्मा एवं परमात्मा (ईश्वर), कार्यकारणवाद। |
| **Unit III** | आस्तिक दर्शनों में मोक्ष, कर्म एवं पुनर्जन्म। |
| **Unit IV** | नास्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय। |
| **Unit V** | बौद्ध– (आर्यसत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पादवाद)<br>जैन– (स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद)। |

**Suggested Reading:**


1. भारतीय दर्शन–आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाराणसी शारदा मन्दिर 1971।
2. दर्शन और जीवन–सम्पूर्णानन्द, परिपूर्णानन्द वर्मा कानपुर– 1941।
3. दर्शन का प्रयोजन–डॉ0 भगवान दास, बनारस ज्ञान मण्डल लिमिटेड द्वितीय संस्करण।
4. दर्शन दिग्दर्शन–राहुल सांकृत्यायन, किताब महल इलाहाबाद।
5. भारतीय दर्शन : विशद विवेचन–डॉ0 गीता शुक्ला– युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
6. भारतीय दर्शन का इतिहास–एस0के0 दास।
7. भारतीय दर्शन–डॉ0 उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समीति ग्रन्थमाला।
8. भारतीय दर्शन की रूपरेखा–हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
9. बुद्धस्तुति– प्रो0सी0 उपेन्द्र राव, लेखक द्वारा प्रकाशित, नोमपेन्ह,कम्बोडिया
10. बौद्धधर्म दर्शन–आचार्य नरेन्द्र देव, पटना बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् 1971।
11. चार्वाक दर्शन–आचार्य आनन्द झा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1969।
12. जैन धर्मदर्शनः एक अनुशीलन–डॉ0 राजेन्द्र मुनि, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bachelor of Arts in Multidisciplinary Study- Sanskrit | | | |
| Programme:- Bachelor of Arts – SANSKRIT | | Year: III | Semester: V Paper- GE II |
| Course Code: GE 05 | Course Title: **संस्कृतसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी संस्कृतसाहित्य में वर्णित राष्ट्रीय चेतना से सुपरिचित होंगे।
2. संस्कृतसाहित्य एवं राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को जान सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रत्येक कार्य को राष्ट्रीयभाव से सम्पन्न करेंगें जिससे स्वयं की और देश की उन्नति होगी।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | वैदिक–साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा, राष्ट्र का संस्कृतपरक अर्थ। कौटिल्य अर्थशास्त्र अध्याय 6 सप्तांग राज्य सिद्धान्त। |
| **Unit II** | राष्ट्रीयता के कारक तत्त्व, राष्ट्रीय प्रतीक राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय चिह्न। भूमिसूक्त–अथर्ववेद 12/11–12। शुक्लयजुर्वेद–राष्ट्रीयता के तत्त्व 22/22। शतपथब्राह्मण–राष्ट्रबोधन का महत्त्व। |
| **Unit III** | वाल्मीकि रामायण में राष्ट्र की भौगोलिकता किष्किन्धाकाण्ड सर्ग 46–48, महाभारत के शान्ति पर्व 65/13–22। |
| **Unit IV** | आधुनिक संस्कृतसाहित्य में राष्ट्रीयचिन्तन– मथुरा प्रसाद दीक्षित–भारतविजयम् नाटक। पण्डिता क्षमाराव–सत्याग्रहगीता ।चारुदेव शास्त्री –गॉधीचरितम्। प्रो0 हरिनारायण दीक्षित–देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्। |

**Suggested Reading:**


1. भारतीय संस्कृति के आधार– श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी।
2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना–प्रो0 हरिनारायण दीक्षित–ईस्टर्न बुक लिंक, दिल्ली।
3. ऋग्वेद 3.53.123.3.53.24.7.33.6), भूमिसूक्त अथर्व 12.1.1–12।
4. शुक्ल यजुर्वेद में राष्ट्रीयता के तत्त्व –22.22।
5. शतपथ ब्राह्मण 9.4.1.1–5।
6. वाल्मीकि रामायण में–किष्किन्धाकाण्ड सर्ग 46–48)–गीता प्रेस गोरखपुर।
7. महाभारत शान्तिपर्व 65/13–22–गीता प्रेस गोरखपुर।
8. वेद में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की अवधारणा–प्रो0 ब्रज विहारी चौबे, संज्ञान वैदिक अध्ययन एवं शोधकेन्द्र– होशियारपुर।
9. संस्कृत और राष्ट्र की एकता–सम्पादक राधावल्लभ त्रिपाठी,अक्षयवट प्रकाशन,इलाहाबाद।
10. पुराणों में राष्ट्रीय एकता– पुष्पेन्दु कुमार दिल्ली नाग पब्लिशर्स।
11. संस्कृतवाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना–डॉ0 विजय कुमार कर्ण, हिन्दुस्तान एकेडमी प्रयागराज।
12. राष्ट्रगीताञ्जलि–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोई उ0प्र0।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bachelor of Arts in Multidisciplinary Study-sanskrit | | | |
| Programme:- Bachelor of Arts –SANSKRIT | | Year: III | Semester: V Paper-IAPC |
| Course Code: IAPC 01 | Course Title: **जनपद में संस्कृतभाषा का प्रभाव सर्वेक्षण** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी जनपद के संस्कृत साहित्यकारों से सुपरिचित हो सकेगे।
2. विद्यार्थी साहित्यकारों के साहित्य से नये कार्यों को करने के लिए प्रेरित होंगे।
3. विद्यार्थियों की रचनात्मक शैली की वृद्धि होगी।
4. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य पठन–पाठन में रूचि लेगें।
5. विद्यार्थी दैनिक जीवन में संस्कृतभाषा के महत्त्व से सुपरिचित होगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | शोधसर्वेक्षण की विधि– उद्देश्य एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | शोधप्रविधि– विभिन्न शोधप्रविधियॉ एवं उनकी उपादेयता। |
| **Unit III** | जनपद अल्मोड़ा के संस्कृत साहित्यकारों का सर्वेक्षण। |
| **Unit IV** | जनपद अल्मोड़ा के साहित्य का अध्ययन एवं रचनात्मक कार्य का सर्वेक्षण। |

**Suggested Reading:**


1–संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय–शारदा मन्दिर, वाराणसी।
4–प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामजी उपाध्याय,वाराणसी।
5–लोक साहित्य एवं संस्कृति–डॉ0 देवसिंह पोखरिया।
6–वैदिक साहित्य और संस्कृति– वाचस्पति गैरोला,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली। (प्रथम संस्करण 1989)।
7–प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार–वीरेन्द्र सिंह, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद (प्रथम संस्करण 1986)।
8–उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार–अतीत से वर्तमान –प्रो0 शालिमा तबस्सुम, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
9– गढवाल को संस्कृत साहित्य की देन– प्रेमद्रत्त चमोली।
10– उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार प्रारम्भ से अद्यतन– प्रो0 शालिमा तबस्सुम,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।